License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

न्यायियों 1:1–3:6

न्यायियों की पुस्तक यहोशू की पुस्तक में दर्ज इस्राएल की कहानी को आगे बढ़ाती है।

परमेश्वर ने कई चमत्कार किए जब उन्होंने कनान इस्राएलियों को दिया। यहोशू की पुस्तक का मुख्य बिंदु यही है।

परमेश्वर के अद्भुत कार्यों के साथ-साथ, इस्राएलियों को भूमि प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी थी। उन्हें परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य भी रहना था। लेकिन उन्होंने उतनी मेहनत नहीं की जितनी उन्हें करनी चाहिए थी। और वे विश्वासयोग्य नहीं रहे। यही न्यायियों की पुस्तक का मुख्य बिंदु है।

प्रभु के दूत ने इस्राएलियों को उनके द्वारा किए गए बुरे कामों के बारे में बताया। लोग अपने किए गए बुरे कामों के बारे में दु:खी थे। लेकिन उन्होंने उन्हें करना बंद नहीं किया।

न्यायियों की पुस्तक इस्राएलियों के कार्यों और उनके साथ हुई घटनाओं के क्रम को वर्णित करती है। यह पाप, कष्ट और उद्धार का स्वरूप था। पहले उन्होंने परमेश्वर से दूर होने का पाप किया। इसमें झूठे देवताओं की पूजा करना शामिल था, जिन्हें बाल और अश्तोरेत कहा जाता था।

इसमें कनानी परिवारों में विवाह करना और उनके साथ एक समुदाय के रूप में रहना भी शामिल था। इसका मतलब था कि इस्राएली अब याजकों के राज्य के रूप में नहीं रहते थे। वे अब पवित्र राष्ट्र के रूप में नहीं रहते थे।

इसके बाद इस्राएलियों ने कष्ट उठाया। परमेश्वर उनके विरुद्ध न्याय लेकर आए क्योंकि उन्होंने सीनै पर्वत की वाचा तोड़ी थी। परमेश्वर ने उन्हें वाचा के शापों का अनुभव करने की अनुमति दी।

जब यह हुआ, तो इस्राएलियों ने पश्चाताप किया और परमेश्वर की ओर लौट आए। फिर परमेश्वर ने अपने लोगों (परमेश्वर के लोगों) को कुछ अगुवों के माध्यम से उद्धार दिया। ये अगुवे 12 न्यायी थे। न्यायियों ने इस्राएलियों को उनके शत्रुओं की शक्ति से छुटकारा दिया।

एक बार जब उन्हें बचा लिया गया, तो इस्राएलियों ने फिर से परमेश्वर से दूर होने का पाप किया। न्यायियों की पुस्तक में इस स्वरूप की कहानियाँ बार-बार घटित होती हैं।

न्यायियों 3:7–5:31

न्यायियों में, पाप, कष्ट और उद्धार का क्रम कुछ शब्दों से शुरू होता है। ये शब्द बताते हैं कि इस्राएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया। ये शब्द न्यायियों की पुस्तक में छ: बार पाए जाते हैं।

पहली तीन बार न्यायियों की कहानियों में हैं ओत्नीएल, एहूद और दबोरा। उनकी कहानियाँ यह दर्शाती हैं कि कैसे परमेश्वर लोगों के माध्यम से कार्य करते हैं। अक्सर परमेश्वर ऐसे अगुवों को चुनते हैं जिन्हें लोग परमेश्वर से चुनने की उम्मीद नहीं करते। इन सभी अगुवों ने परमेश्वर को उनके माध्यम से कार्य करने के लिए तैयार किया।

परमेश्वर ने ओत्नीएल का उपयोग करके इस्राएलियों को अराम के राजा से बचाया। परमेश्वर ने एहूद का उपयोग करके इस्राएलियों के लिए मोआब पर विजय प्राप्त की। दबोरा एक भविष्यवक्ता थीं। वह बुद्धि से परिपूर्ण थीं और परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य थीं। परमेश्वर ने दबोरा, बाराक और याएल का उपयोग करके इस्राएलियों को एक कनानी राजा से बचाया।

12 न्यायियों में से कुछ ने एक ही समय में अगुवाई की। यह शमगर के मामले में था। यह स्पष्ट नहीं है कि वह इस्राएली था या नहीं, लेकिन उसने कई पलिश्तियों को मारा। जब न्यायियों ने युद्ध में विजय प्राप्त की, तो उनके क्षेत्र के गोत्र शांति में रहे। यह 40 वर्षों की अवधि के लिए हुआ।

न्यायियों 6:1–9:57

इस्राएलियों ने प्रभु की दृष्टि में बुरा किया। ये शब्द न्यायियों की कहानियों में भी पाए जाते हैं, जैसे गिदोन, यिप्तह और शिमशोन। उनकी कहानियाँ उन लोगों के बारे में कुछ दिखाती हैं जिनके माध्यम से परमेश्वर कार्य करते हैं।

गिदोन, यिप्तह और शिमशोन परमेश्वर को अच्छी तरह नहीं जानते थे और न ही उनकी विश्वासयोग्यता से सेवा करते थे। फिर भी परमेश्वर ने उनके माध्यम से अपने लोगों को उनके कष्टों से बचाया। एक भविष्यद्वक्ता ने समझाया था कि इस्राएलियों के साथ मिद्यानियों द्वारा बुरा व्यवहार क्यों किया जा रहा था। यह इसलिए था क्योंकि इस्राएलियों ने एकमात्र परमेश्वर की उपासना करना छोड़ दिया था। फिर भी गिदोन ने उनके कष्टों के लिए परमेश्वर को दोषी ठहराया।

पवित्र आत्मा ने गिदोन को एक छोटी सेना की अगुवाई करने में सक्षम बनाया ताकि वे मिद्यानियों को नष्ट कर सकें। गिदोन ने पहचाना कि परमेश्वर प्रभु और राजा हैं। फिर भी गिदोन ने इस्राएलियों को परमेश्वर के बजाय एक सोने की वस्तु की पूजा करने के लिए प्रेरित किया। गिदोन ने पहचाना कि इस्राएल में केवल परमेश्वर ही शासक होने चाहिए। फिर भी उसके पुत्रों ने शेकेम पर शासन किया।

अबीमेलेक ने स्वयं को शेकेम के लोगों का राजा भी बना लिया। शेकेम वह स्थान था जहाँ इस्राएलियों ने सीनै पर्वत की

वाचा को स्वीकार किया था। यह यहोशू के समय की बात है। लेकिन वे शेकेम में बाल-बरीत या एल-बरीत नामक देवता की पूजा कर रहे थे।

इब्रानी भाषा में परमेश्वर का नाम वाचा का प्रभु होता है। यह दिखाता है कि कैसे इस्राएलियों ने अपने परमेश्वर की उपासना को कनानी झूठे देवताओं की उपासना के साथ मिला दिया। अबीमेलेक और शेकेम के लोग दोनों ही अपने हिंसक और बुरे कर्मों के कारण नष्ट कर दिए गए।

न्यायियों 10:1–12:15

न्यायी तोला ने एप्रैम में अगुवाई की। न्यायी याईर ने गिलाद में अगुवाई की।

परमेश्वर चाहते थे कि उनके लोग एक याजकों का राज्य और एक पवित्र राष्ट्र के रूप में जीवन व्यतीत करें। लेकिन वे ऐसा नहीं कर रहे थे। इस्राएली अपने आस-पास के लोगों के देवताओं की पूजा करते रहे। इसके कारण, वाचा के शाप उन पर आए। पलिश्ती और अम्मोनी उनसे बुरी तरह से पेश आए। परमेश्वर ने कहा कि वे अब इस्राएलियों को उनके शत्रुओं से नहीं बचाएंगे। फिर भी वे नहीं चाहते थे कि इस्राएल लगातार कष्ट सहता रहे। इसलिए जब उन्होंने झूठे देवताओं की पूजा करना बंद कर दिया, तो उन्होंने उन्हें क्षमा कर दिया।

परमेश्वर ने यरदन नदी के पूर्व के गोत्रों को अम्मोनियों से बचाया। यिप्तह की कहानी दिखाती है कि यह कैसे हुआ। यह भी दिखाती है कि इस्राएली लोगों ने कैसे कनानी पूजा प्रथाओं का उपयोग करके परमेश्वर की उपासना की। यिप्तह ने परमेश्वर से एक वादा किया जो उन्हें नहीं करना चाहिए था। लैव्यव्यवस्था 5:4–6 और लैव्यव्यवस्था 27:1–8 में मूसा की व्यवस्था ने ऐसे वादों को रोकने का तरीका बताया। लेकिन यिप्तह ने अपना वादा निभाया और अपनी बेटी को मार डाला।

बच्चों की बलि देना कनानी लोगों का अपने झूठे देवताओं की पूजा करने का एक तरीका था। यिप्तह ने इस बुरे अभ्यास का उपयोग सच्चे परमेश्वर की सेवा करने के लिए करने की कोशिश की। यह कहानी यरदन नदी के पूर्व और पश्चिम के गोत्रों के बीच की समस्याओं को भी दिखाती है। एप्रैम के गोत्र और गिलाद क्षेत्र में रहने वाले गोत्रों के बीच युद्ध हुआ।

यिप्तह के समय के बाद अन्य न्यायी आए। इबसान बेतलेहेम में न्यायी थे। एलोन जबुलून क्षेत्र में न्यायी थे। और न्यायी अब्दोन ने इस्राएलियों की अगुवाई एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र में की।

न्यायियों 13:1–16:31

पलिश्तियों ने यरदन नदी के पश्चिम में इस्राएलियों के साथ बुरा व्यवहार किया। शिमशोन की कहानी दिखाती है कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को उनसे कैसे बचाया।

परमेश्वर ने दान के गोत्र की एक महिला को चुना जिसकी संतान नहीं हो सकती थी। उन्होंने उसे एक पुत्र को जन्म देने योग्य बनाया। परमेश्वर ने ऐसा ही कुछ सारा, रिबका और राहेल के साथ भी किया था।

शिमशोन को उनके माता-पिता द्वारा प्रभु के लिए अलग किया जाना था। उसे अपने पूरे जीवन के लिए नाज़ीर होना था। परमेश्वर की आत्मा ने शिमशोन को अद्भुत सामर्थ दी। वे कई पलिश्तियों को नष्ट करने में सक्षम थे।

फिर भी, शिमशोन ने कई ऐसे कार्य किए जो परमेश्वर और मूसा की व्यवस्था के विरुद्ध थे। उन्होंने वैसे नहीं जिया जैसे नाज़ीरियों को जीना चाहिए था। और जिस तरह से उसने महिलाओं के साथ व्यवहार किया, उससे कई समस्याएं उत्पन्न हुईं। यहां तक कि इससे उनकी अद्भुत सामर्थ भी चली गई।

जब एक नाज़ीर अपने बाल काटते थे, तो यह दिखाता था कि उनकी परमेश्वर की सेवा करने की प्रतिज्ञा समाप्त हो गई थी। जब दलीला ने शिमशोन के बाल काटे, तो शिमशोन अन्य पुरुषों से अलग नहीं रहा। उसके पास अब उसकी अद्भुत सामर्थ नहीं रही। पलिश्ती मानते थे कि यह परिवर्तन उनके देवता दागोन का एक महान कार्य था।

अपनी प्रार्थना में शिमशोन ने पहचाना कि परमेश्वर प्रभु और राजा हैं। फिर एक आखिरी बार परमेश्वर ने शिमशोन को उसकी अद्भुत सामर्थ वापस दी। इससे परमेश्वर की सामर्थ और झूठे देवता दागोन पर उनकी प्रभुता प्रकट हुई।

न्यायियों 17:1–18:31

मीका और दान के लोगों की कहानी इस्राएल के बारे में कुछ दिखाती है। इस्राएल में परिवार और गोत्र याजकों के राज्य और पवित्र राष्ट्र के रूप में नहीं जी रहे थे। उन्होंने उन वस्तुओं से मूर्तियाँ बनाईं जिन्हें उन्होंने परमेश्वर के लिए अलग रखा था। फिर उन्होंने इन मूर्तियों की पूजा देवताओं के रूप में की।

मीका, उसके परिवार और एक लेवी जो मूसा की वंशावली में से था, उन्होंने यह किया। ऐसा ही दान के पूरे गोत्र ने भी किया।

दान के गोत्र ने उस भूमि के बारे में परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं किया जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी। उन्होंने पलिश्तियों को नहीं निकाला। इसके बजाय, गोत्र ने वहां से हटकर उन लोगों पर हमला किया जिन्होंने उनका कोई अहित नहीं किया था।

न्यायियों की पुस्तक बताती है कि उन दिनों इस्राएल के पास कोई राजा नहीं था। उन्हें आशा थी कि एक राजा हो जो परमेश्वर की विश्वासयोग्यता से सेवा करे, और परिवारों और गोत्रों की सहायता कर सके। उन्हें ऐसे अगुवों की आवश्यकता थी जो उन्हें परमेश्वर की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य बनाए रखें।

न्यायियों ***19**:1–21:25*

न्यायियों 19:1–21:25

लेवीय पुरूष की रखैल की कहानी इस्राएल के 12 गोत्रों के बारे में कुछ दिखाती है।

वे एक पवित्र राष्ट्र के रूप में नहीं जी रहे थे। न्यायियों ने दर्ज किया कि लोग वही करते थे जो उन्हें सही लगता था। इसके कारण महिलाओं के साथ भयानक व्यवहार किया जाने लगा। इससे ऐसी प्रतिज्ञाएं और निर्णय लिए गए जो नुकसान पहुंचाते थे। इससे उन लोगों की रक्षा की गई जिन्होंने बुरे काम किए।

इस्राएली परमेश्वर के मार्गों का पालन नहीं कर रहे थे। वे कनानियों की तरह जीवन जी रहे थे। उन्हें कनानियों को नष्ट करना था। इसके बजाय, उन्होंने गृहयुद्ध में एक-दूसरे को नष्ट कर दिया।

न्यायियों की पुस्तक में दो बार और दर्ज है कि उन दिनों में इस्राएल का कोई राजा नहीं था। उन्हें आशा थी कि एक राजा जो परमेश्वर से प्रेम करता हो और उसकी आज्ञा मानता हो, वह गोत्रों की सहायता कर सकता है। इस्राएलियों को ऐसे अगुवों की आवश्यकता थी जो उनकी सहायता करें कि वे वही करें जो परमेश्वर ने उन्हें सही सिखाया था।